अभ्यास पत्रक

पाठ – साखी (कबीर)

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. काव्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोइ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होइ॥"

1. 'पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ' पंक्ति का तात्पर्य क्या है?

उत्तर - .....
.....

2. कवि ने सच्चा पंडित किसे कहा है?

उत्तर - .....
.....

3. कबीर की दृष्टि में प्रेम का स्थान क्या है?

उत्तर - .....
.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** कबीर के अनुसार केवल शास्त्रों का ज्ञान पंडित होने के लिए पर्याप्त नहीं है।
   कारण: सच्चा ज्ञान अनुभव और प्रेम से प्राप्त होता है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** 'राम बियोगी ना जिवै' यह पंक्ति विरह की वेदना को हल्के रूप में प्रकट करती है।
   कारण: कबीर का मानना था कि ईश्वर का वियोग आनंददायक होता है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. कबीर ने ज्ञान प्राप्ति के लिए किसे आवश्यक बताया?
   (क) तीर्थ यात्रा (ख) गुरुमुखी अनुभव (ग) वेद पाठ (घ) तपस्या

7. "जब मैं था तब हरि नहीं" इस पंक्ति में किस भाव की प्रधानता है?
   (क) भक्ति (ख) श्रद्धा (ग) अहंकार-त्याग (घ) विरोध

8. 'बिरह भुवंगम' में 'भुवंगम' का अर्थ है—
   (क) प्रेम (ख) पीड़ा (ग) विष (घ) साँप

9. कबीर के अनुसार सच्चा भक्त कौन है?
   (क) जो उपवास करता हो (ख) जो मंदिर जाता हो
   (ग) जो प्रेम से ईश्वर को याद करता हो (घ) जो संन्यासी हो

10. कबीर की भाषा शैली की विशेषता क्या है?
    (क) गूढ़ और कठिन भाषा (ख) तर्कपूर्ण संस्कृत निबंध
    (ग) सरल, सटीक, लोकभाषा में (घ) उर्दू शैली में

eGyanArchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. कबीरदास के अनुसार पुस्तक पढ़कर भी पंडित न बनने का कारण क्या है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. 'ढाई आखर प्रेम का' में प्रेम का क्या स्वरूप है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. कबीर की रचनाओं में भाषा और शैली की कौन-सी विशेषताएँ हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. कबीर की साखियों में समाज सुधार की भावना कैसे प्रकट होती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "कबीरदास की वाणी आज भी हमारे जीवन को दिशा देने में सक्षम है" – इस कथन की पुष्टि कविता 'साखी' के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. इसका तात्पर्य है कि केवल ग्रंथ पढ़ने से कोई विद्वान नहीं हो जाता।
2. जिसने प्रेम को समझा और जिया है, वही सच्चा पंडित है।
3. प्रेम सबसे बड़ा और वास्तविक ज्ञान है, जो जीवन को सार्थक बनाता है।
4. (क)
5. (घ)
6. (ख)
7. (ग)
8. (घ)
9. (ग)
10. (ग)
11. क्योंकि पुस्तकीय ज्ञान केवल शाब्दिक होता है; अनुभव और आचरण के बिना वह अधूरा है।
12. प्रेम यहाँ सच्चे आध्यात्मिक भाव, परस्पर समर्पण और ईश्वर भक्ति का प्रतीक है।
13. सधुक्कड़ी भाषा, दोहा छंद, लोकबोली का प्रयोग, सहजता और व्यावहारिक संदेश।

14. कबीर की साखियाँ केवल भक्ति नहीं, समाज सुधार का संदेश भी देती हैं। उन्होंने जात-पात, ढोंग, पाखंड, अहंकार और बाह्य पूजा का विरोध किया। वे कहते हैं कि सच्चा धर्म प्रेम, सेवा और आत्मज्ञान में है। 'निंदक नेड़ा राखिए', 'पोथी पढ़-पढ़...', 'जब मैं था...' जैसी साखियाँ हमें आत्ममंथन, विनम्रता और भेदभाव रहित जीवन की शिक्षा देती हैं। उन्होंने ईश्वर को मंदिर, मस्जिद में नहीं, बल्कि मन में खोजने को कहा।

15. कबीरदास की साखियाँ युगों से मानवता को दिशा देती आई हैं। उनका जीवन और वाणी भक्ति, ज्ञान, प्रेम और समानता के अद्वितीय समन्वय हैं। 'जब मैं था तब हरि नहीं' के माध्यम से उन्होंने अहंकार त्याग की सीख दी, 'पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ' में आचरण और अनुभव को ज्ञान से ऊपर रखा, और 'ऐसी बानी बोलिए' में मधुर वाणी के महत्व को बताया। आज के समाज में जहाँ तनाव, अहं, और बाह्य आडंबर बढ़ रहा है, वहाँ कबीर की वाणी हमें आत्मिक शांति, सहिष्णुता और सच्चे मानव बनने की प्रेरणा देती है। इसलिए वे आज भी प्रासंगिक हैं।